

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 6

जोशुआ 2

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र 6, जोशुआ 2, राहब और जासूस है।

अब हम जोशुआ अध्याय दो के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं और यह कुछ मायनों में एक तरह की कहानी है।

इस्राएल के लोगों की कहानी यहोशू और यहोशू और लोगों को परमेश्वर के निर्देश के साथ अध्याय एक में शुरू होती है। अध्याय तीन में उनका जॉर्डन पार करना है। लेकिन यहाँ एक तरह का मूल पक्ष है जहाँ हम कनान में जेरिको में दो इस्राएलियों का अनुसरण करते हैं, और वे राहाब नाम के किसी व्यक्ति से मिलते हैं।

और ऐसी चीजें हैं जो इन जासूसों और राहाब के साथ वहां सामने आती हैं, और जो उन्हें चीजों के बारे में कुछ आत्मविश्वास देने की पृष्ठभूमि बनाती है। लेकिन तो आइये इस पर नजर डालते हैं। राहब एक कनानी वेश्या है, और वेश्या के लिए हिब्रू में कुछ अलग-अलग शब्द हैं।

हम दूसरी बार एक दूसरे का जिक्र करेंगे। यह वह शब्द है जो वेश्या के लिए रोजमर्रा का सामान्य शब्द है जिसके बारे में हम हर समाज में और मानव इतिहास में लगभग हर समय सोचते हैं। एक महिला जो पैसे के लिए खुद को बेचती है।

मैं कहूंगा कि यह अपने आप में अच्छी बात नहीं है, लेकिन राहब इस अध्याय से आस्था के एक महान नायक के रूप में उभर कर सामने आता है। न केवल वह क्या करती है, बल्कि वह बातें भी जो वह कहती है। इसलिए, जैसे-जैसे हम अध्याय का अध्ययन करेंगे हम इसे खोलने का प्रयास करेंगे।

राहब कई कारणों से मेरे निजी नायकों में से एक बन गया है। तो, नई कहानी शुरू होती है, श्लोक एक, नून का पुत्र यहोशू, शित्तिम से गुप्त रूप से दो लोगों को जासूस के रूप में भेजता है और कहता है, जाओ भूमि को देखो, विशेष रूप से जेरिको को। तो, आयोग को सभी भूमि को देखना है, लेकिन वास्तव में यह विशेष रूप से जेरिको पर केंद्रित है।

और इस अध्याय में हमने जेरिको भाग के बारे में ही पढ़ा है। मुझे संदेह है कि यदि चीजें विकसित होने के साथ-साथ वे भूमि की लंबाई और चौड़ाई तक चले गए, तो हम देखेंगे। मैं इन जासूसों के बारे में हमेशा हँसता हूँ क्योंकि ये बहुत अच्छे जासूस नहीं लगते।

यहोशू ने उसे गुप्त रूप से बाहर भेज दिया और तुरंत दो श्लोक में, जेरिको के राजा ने उनके बारे में सुना। इसलिए, उन्होंने गुप्त रहकर अच्छा काम नहीं किया। सो वे भीतर आए, और चले गए, और राहाब नाम एक वेश्या के घर में पहुंचे, और वहां ठहरे।

अब इस बात पर चर्चा हो रही है कि वेश्या के घर जाने के पीछे उनकी प्रेरणा क्या थी. एक स्तर पर, आप कह सकते हैं, ठीक है, वे बस यही चाहते थे, वे बेवफा नौकर थे और वे अपने स्वयं के कुछ सुख, देह का सुख चाहते थे। दूसरों ने कहा है, और मैं दूसरे दृष्टिकोण से सहमत हूँ, अर्थात् वे वहाँ थे।

वास्तव में घर में जाने आदि के शब्द, हिब्रू शब्दावली की तकनीकी चर्चा की तरह हैं। वे संभोग या यौन प्रवेश के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द नहीं हैं। वे एक जगह पर टिके रहने की अधिक कोशिश कर रहे हैं।

और इसलिए, मुझे लगता है कि वे वहाँ बसने के लिए ही गए थे। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि जेरिको एक लोकप्रिय व्यापार मार्ग पर है और लोग आते-जाते रहते हैं और एक वेश्या का घर होगा जहाँ आप गुप्त रूप से रह सकते हैं। और लोग ऐसा करेंगे, आप कहानियाँ सुन सकते हैं और आपको जानकारी मिल सकती है।

तो, मुझे ऐसा लगता है कि यही हो रहा है। लेकिन फिर भी, श्लोक दो में, जेरिको के राजा को पता चलता है और वह निर्णय लेता है कि वह लोगों को यह पता लगाने के लिए भेजना चाहता है कि ये लोग कौन हैं। इसलिए, वह पद तीन में राहब के पास दूत भेजता है और उनसे उन लोगों को बाहर लाने के लिए कहता है।

और निःसंदेह, पद चार में राहाब ने उन लोगों को ले जाकर छिपा दिया था। और वह कहती है, हाँ, वे आए थे, लेकिन मुझे नहीं पता कि वे कहाँ हैं। और मैं नहीं जानता था कि वे कहाँ से थे।

और जब रात को वह चीज़ बन्द हो गई, पद पाँच, तो वे चले गए। मुझे नहीं पता कि वे कहाँ गए. बाहर जाओ और उनका पीछा करो.

और पद छः हमें बताता है, परन्तु वह उन्हें छत पर ले आई, और सन के मोजों में छिपा दिया। फिर पीछा करने वालों ने यरीहो से यरदन नदी तक घाटों तक पीछा किया। और फाटक बन्द कर दिया गया, और ये पीछा करनेवाले असहाय हो गए।

पीछा करनेवालों को वे मनुष्य नहीं मिले, क्योंकि राहाब ने उन्हें छिपा रखा था। तो, इस अर्थ में, हम बाद में उसके द्वारा भेजे गए अध्याय में पाते हैं, वे सुरक्षित रूप से यहोशू के पास वापस आए और उन्होंने जो पाया था उसके बारे में बताया। तो, इस अर्थ में, राहब ने जासूसों को बचाया है और उसने आतिथ्य सत्कार और उन्हें छिपाकर उनकी मदद की है।

इसमें थोड़ी सी गड़बड़ है कि ऐसा लगता है जैसे उसने ऐसा करते हुए बिल्कुल झूठ बोला है। इसलिए, ईसाई नैतिक हलकों में इस पर बहुत चर्चा हुई है। और आप इस प्रकार की स्थिति से कैसे निपटते हैं, इसके बारे में तीन प्रमुख सिद्धांत हैं।

क्या, आप जानते हैं, आधुनिक समय के क्लासिक उदाहरण में, क्या होगा यदि, आप जानते हैं, जब नाज़ी आपके घर आ रहे थे तो आप यहूदियों को छिपा रहे थे, तो आप इससे कैसे निपटेंगे?

और कुछ लोग तर्क देंगे कि ये पवित्रशास्त्र की पूर्णताएँ हैं। आपको कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए बल्कि जीवन की रक्षा भी करनी चाहिए। और जब वे संघर्ष में आते हैं, तो आपको दोनों बुराइयों में से कम को चुनना होगा।

झूठ बोलना बुरा होगा, जीवन त्यागना बुरा होगा। तो, छोटा वाला चुनें। और इस मामले में, तर्क यह है कि झूठ बोलना कम बुरी बात है और इससे जान बच जाती है।

अन्य लोग यह तर्क देंगे कि, नहीं, ये गैर-परस्पर विरोधी निरपेक्षताएँ हैं और ईश्वर कोई रास्ता देगा। नया नियम कहता है कि हम कभी भी अपनी क्षमता से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ते। मनुष्य होने के नाते, हमारी ही तरह, यीशु को भी हर तरह से परीक्षा का सामना करना पड़ा, और फिर भी उसने कभी पाप नहीं किया।

तो, क्या उसका सामना दो ऐसी चीज़ों से हुआ होगा जो बिल्कुल विरोधाभासी थीं और उसे कम बुरी बुराइयों को चुनना होगा? नहीं, उसने कभी नहीं, उसने कभी कोई बुराई नहीं चुनी। दूसरा कहेगा, ठीक है, और यही वह स्थिति है जो मार्टिन लूथर ने अपनाई थी, वह कहेगा, बस आगे बढ़ो और पाप करो, कम बुरे को चुनो। लेकिन साहसपूर्वक पाप करें, जैसा कि मार्टिन लूथर का कथन है, लेकिन फिर साहसपूर्वक स्वीकार करें और अपनी स्वीकारोक्ति के लिए अनुग्रह प्राप्त करें।

मेरा विचार है कि इस समय ये गैर-परस्पर विरोधी निरपेक्षताएँ हैं जिनसे बाहर निकलने का रास्ता ईश्वर ही सुझाएगा। हम आधुनिक समय में कहानियाँ सुनते हैं, उदाहरण के लिए, वर्षों पहले आयरन कर्टेन के पार, बाइबिल की तस्करी की। जहाँ लोग सूटकेस से भरे सूटकेस या बाइबिल से भरी कारों के साथ पहुंचते थे, और गार्ड सूटकेस देखते थे और उन्हें अंदर जाने देते थे।

या तो उनका मन बदल गया और उन्होंने उन्हें आगे बढ़ने दिया या फिर उनकी आंखें मूंद ली गईं। हमें पता नहीं। इससे बचने के रास्ते होंगे, लेकिन यह एक वास्तविक है, यह आधुनिक समय में एक बहुत ही वास्तविक नैतिक मुद्दा है।

न केवल नाज़ी जर्मनी, बल्कि आधुनिक चीन और अन्य स्थानों में भी चर्च को सताया जाता है। मुझे इस साल की शुरुआत में, वास्तव में, 2018 में चीनी पादरियों के एक बड़े समूह को पढ़ाने का सौभाग्य मिला था। और यह एक बहुत ही वास्तविक बात है कि अधिकारी दरवाजे पर दस्तक देते हैं।

और इसलिए, ऐसे अच्छे इंजील रूढ़िवादी ईसाई हैं जो उन तीन विचारों में से किसी एक को अपनाते हैं। यह आपकी रूढ़िवादिता का पैमाना नहीं है कि आप इनमें से किसे चुनते हैं। लेकिन फिर भी, आइए नए नियम के कुछ अंशों पर नजर डालें।

उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि राहब का उल्लेख वहाँ कई बार किया गया है। और उनमें से एक इब्रानियों की पुस्तक, अध्याय 11 में है। इसलिए, हम आपको बस उस तक ले जाना चाहेंगे और आपको इसकी याद दिलाना चाहेंगे।

यदि आप मेरे साथ चलना चाहते हैं, तो इब्रानियों अध्याय 11। निस्संदेह, यह अध्याय, विश्वास का महान अध्याय, विश्वास के नायक, प्रसिद्धि का हॉल, इसलिए बोलने के लिए, विश्वास का हॉल है। और इसलिए, इब्रानियों 11, आयत 31 में राहब का उल्लेख है।

इसमें कहा गया है, विश्वास से, राहाब, वेश्या, उन लोगों के साथ नाश नहीं हुई जो अवज्ञाकारी थे क्योंकि उसने जासूसों का मैत्रीपूर्ण स्वागत किया था। मुझे लगता है कि इब्रानियों में शब्दों का प्रयोग सावधानी से किया गया है। यह नहीं कहता कि वह आस्थावान महिला थी क्योंकि उसने जासूसों को न छोड़ने के लिए झूठ बोला था।

वह बस उन्हें लेकर आई और उनका दोस्ताना स्वागत किया। और फिर मुझे विश्वास है कि उसके झूठ के लिए उसे दोषी ठहराया जा सकता है। वह कुछ और कह सकती थी और भगवान ने बचने का कोई रास्ता दे दिया होता।

लेकिन वैसे भी, इब्रानियों की किताब विशेष रूप से उस झूठ में नहीं आती है। लेकिन फिर जेम्स की पुस्तक, अध्याय 2 में उसका अधिक विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। और हम यहां कार्यों द्वारा औचित्य के बारे में देखेंगे, विश्वास से नहीं। और इसलिए याकूब, अध्याय 2, श्लोक 25 कहता है, उसी प्रकार, राहाब वेश्या भी कर्मों से धर्मी नहीं ठहरी जब उसने दूतों को प्राप्त किया और उन्हें दूसरे मार्ग से भेजा।

तो फिर, इसमें उसके कार्यों और उसके कार्यों का उल्लेख है। उसने दूतों का स्वागत किया। उसने उन्हें दूसरे रास्ते से भेज दिया।

जेम्स की किताब में इस बात का ध्यान रखा गया है कि झूठ का समर्थन न किया जाए, लेकिन इसमें उन चीजों का उल्लेख किया गया है जो उसने कीं। तो वापस जोशुआ, अध्याय 2 पर। छंदों में, हम 4 से 8 या 4 से 7 कहेंगे, मैं देखता हूं, मैं इसे कार्यों में राहब का विश्वास कहूंगा। उसने क्या किया? उसने जासूसों का स्वागत किया।

उसने उन्हें छुपाया। उसने पीछा करनेवालों को धोखा दिया। और फिर अंततः उसने उन्हें जाने दिया।

यह कार्रवाई में उसका विश्वास होगा। और यह नये नियम से स्पष्ट है। लेकिन मैंने अक्सर सोचा है और अंततः पाठ को और अधिक गहराई से खोजा है और आश्चर्य हुआ है, क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे हम राहब के विश्वास को उन शब्दों में भी व्यक्त कर सकते हैं जो उसने बोले थे, न कि केवल जो उसने किया था? और मुझे लगता है कि उत्तर हां है।

और उस उत्तर का मूल श्लोक 9 से 11 में है। तो, आइए उस पर गौर करें। तो, राहाब छत पर आती है, पद 8, और फिर वह जासूसों से कुछ बातें कहती है।

और वह कहती है, मैं जानती हूं, कि यहोवा ने तुम्हें वह देश दिया है, और तुम्हारा भय हम पर समा गया है, और उस देश के निवासी तुम्हारे साम्हने पिघल जाते हैं। तो, पहली बात पर ध्यान दें जो वह कहती है, मैं जानती हूं कि प्रभु या यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर का नाम है, मैं जानता हूं कि

वह वही है जिसने तुम्हें यह भूमि दी है। ये वे शब्द हैं जो उस विषय के मुख्य कथन को प्रतिध्वनित करते हैं जिसका मैंने भूमि के उपहार के बारे में उल्लेख किया है।

यह ईश्वर का उपहार है और यह भूमि है। वह वही बातें कहती हैं। और वह कहती है, हम तुझ से डरते हैं, और पृथ्वी के सब निवासी तेरे साम्हने घबरा जाते हैं।

क्यों? पद 10, क्योंकि हमने दो बातें सुनी हैं। पहला, जब तुम मिस्र से निकले तो यहोवा ने तुम्हारे साम्हने लाल समुद्र का जल कैसे सुखा दिया। तो, यह 40 साल पहले की घटना है।

और इसलिए उस स्मृति की दृढ़ता राहब के दिनों तक बनी रही। हम नहीं जानते कि राहब यहाँ कितनी उम्र का है। वह शायद एक जवान लड़की रही होगी।

वह भले ही पैदा नहीं हुई हो, लेकिन वह स्मृति यहां नंबर एक पर कायम है। और नंबर दो, हम ने यह भी सुना कि तू ने यरदन के उस पार रहनेवाले एमोरियों के दो राजाओं सीनै और ओग के साथ क्या किया, जिनको तू ने नाश करने के लिये सौंप दिया। इसलिए जब वे मिस्र से पलायन के वर्षों बाद जंगल में भटक रहे थे, तो उनकी मुलाकात इन दो राजाओं से हुई और उन्होंने युद्ध किया और उन्हें हरा दिया।

तो, राहब ने दो बातें सुनी हैं, एक साल पहले, और एक हाल ही में। ये दोनों दिखाते हैं कि कैसे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, इन राष्ट्रों विशेषकर मिस्रियों के विरुद्ध उनकी तरफ हैं। वे उस समय महान साम्राज्य थे।

और फिरौन की सेना समुद्र में डूब गई है, आप जानते हैं, निर्गमन 14 और 15। राहब आगे कहता है, और जैसे ही हमने इसे सुना, हमारे दिल पिघल गए। दिलचस्प बात यह है कि हिब्रू में, श्लोक 9 में पिघलने वाला शब्द श्लोक 11 में पिघलने वाले शब्द से भिन्न है।

एक तो बर्फ की तरह पिघलना है। एक तो मोम की तरह पिघलना है। और मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि, चाहे आप इसे कैसे भी देखें, हम सिर्फ एक पोखर थे।

हम थे, हमारे अंदर कोई प्रतिरोध नहीं बचा था। हमारी कोई रीढ़ नहीं बची थी। सुनते ही हमारा हृदय द्रवित हो गया।

तेरे कारण किसी मनुष्य में आत्मा न रही। मैं यहां रुककर विडंबना की ओर इशारा करना चाहता हूं। क्योंकि यदि आपको पहले की कहानियाँ याद हों, तो संख्याओं की पुस्तक, अध्याय 13 और 14 में, इस्राएलियों ने कनान देश में जासूस भेजे थे।

और जासूसों की प्रतिक्रिया क्या थी? गुप्तचरों का कहना था कि यह एक ऐसी भूमि है जहाँ पर दानवों का वास है। हम उनके सामने टिड्डे के समान हैं। यह शहर एक महान, किलेबंद शहर है।

भूमि की उपज इतनी अधिक है कि बलात्कार, इतना अधिक कि बलात्कार के समूह, दो आदमियों को उन्हें ले जाना पड़ता है, इत्यादि। तो, गिनती की पुस्तक में रिपोर्ट यह है कि

इस्राएली कनानियों से भयभीत हैं। और इसकी वजह से उन्हें 40 साल तक जंगल में भटकने की सज़ा सुनाई गई।

और पहली पीढ़ी ख़त्म हो जाती है. यह सब अव्यवस्था वगैरह है। यहां जोशुआ 2 में, हम आंतरिक परिप्रेक्ष्य पाते हैं।

कनानवासी क्या सोच रहे थे? कनानवासी इस्राएलियों से भयभीत थे। और यदि इस्राएलियों को यह पता होता, या यदि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर भरोसा किया होता, तो वे जंगल में उस सभी समस्या से बच सकते थे। वे इतने वर्षों तक मन्ना खाने से बच सकते थे क्योंकि वे इतने बीमार थे।

तो, यह मेरे लिए एक स्वादिष्ट विडंबना है कि हम अंततः यहां राहाब की आंखों में कनानियों के आंतरिक परिप्रेक्ष्य को देखते हैं। और यह उस समय की इस्राइली आपत्तियों को अमान्य कर देता है। लेकिन अब राहाब के विश्वास के बयान का मूल श्लोक 11 के अंत में पाया जाता है।

वह कहती है, प्रभु के लिए, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए, वह ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर है। और मुझे कनानी धर्म के बारे में एक शब्द कहने के लिए यहीं रुकना चाहिए। कनानियों के लिए, सर्वोच्च देवता बाल थे।

और बाल, जिसके बारे में हम बाइबल में कई बार पढ़ते हैं। हमें बाइबल से बाल के धर्म की प्रकृति के बारे में पूरी जानकारी नहीं है। इसे आमतौर पर बाहर से एक विकृत चीज़ के रूप में देखा जाता है।

लेकिन 1929 में इसकी खोज सीरिया के भूमध्यसागरीय तट पर उगरिट नामक शहर में हुई थी। और वहां खुदाई की गई. वहां एक बड़े शहर, एक विश्वव्यापी शहर की खोज की गई।

यह व्यापार मार्गों पर था और वहाँ गोलियाँ थीं। वहाँ एक विशाल शाही पुरालेख मिला जिसमें हजारों तख्तियाँ थीं जो हमें वाणिज्य और धर्म आदि के बारे में जानकारी देती थीं। और वहाँ ढेर सारी गोलियाँ थीं जो कनानियों के धर्म पर चर्चा कर रही थीं, जिसमें बाल सर्वोच्च देवता है।

परन्तु हम उसके पिता, एल नाम के परमेश्वर, और अशेरा नाम की उसकी पत्नी के बारे में सब कुछ सीखते हैं। हम बाइबिल से जानते हैं, अशेरा, आमतौर पर उन खंभों में जो उसके सम्मान में बनाए गए थे। लेकिन बाल कहानियों में हम उसके बारे में और भी बहुत कुछ सीखते हैं।

हम उसके विरोधियों के बारे में सीखते हैं, मोट नाम का एक देवता, मृत्यु का देवता, और यम नामक एक देवता, जो समुद्र का देवता है। और उसकी बहन, अनात, और अनात और मोट लड़ते हैं। और यह एक बहुत ही दिलचस्प कहानी है.

और यदि आप खोजेंगे तो निश्चित रूप से आप उन्हें इंटरनेट पर पा सकते हैं। लेकिन मुद्दा यह है कि, कनानी देवताओं का यह पूरा देवालय है जिनकी कनानी पूजा करते थे। और उनके लिए समर्पित अभयारण्यों आदि की प्रणालियाँ थीं।

परन्तु बाल सर्वोच्च देवता था और वह तूफान का देवता था। हम सुनते हैं, वह बादलों का सवार था। और तूफान के देवता ने न केवल बिजली बल्कि बारिश भी भेजी।

और जैसे वर्षा ने पृथ्वी को सिंचित किया, और भूमि को उपजाऊ बनाया, और लोगों को फसलें उगाने की अनुमति दी। और परिणामस्वरूप, लोग जीवित रहेंगे। प्राचीन दुनिया में, भंडारण वगैरह के बिना, अकाल और सूखा एक बहुत ही वास्तविक चीज़ और अस्तित्वगत संकट था।

और इसलिए, बाल वह भगवान था जिसे लोग प्रसन्न करना चाहते थे, ताकि वह बारिश भेजे, फसलें बढ़े, इत्यादि। तो, वह उर्वरता का देवता और स्वर्ग का देवता था इत्यादि। बस मूल रूप से, विडंबना यह है कि, वर्षों बाद, एलिय्याह और बाल के भविष्यवक्ताओं के बीच टकराव को याद करें।

जब बाल वेदी पर आग भेजने में असमर्थ था, एलिय्याह प्रभु ने 1 राजा 18 में आग भेजी थी। उस कहानी के अंत में, याद रखें कि बाल के सभी भविष्यवक्ता मारे गए थे और फिर इससे सूखे का अंत हुआ। वहाँ तीन साल का सूखा पड़ा था और एलिय्याह बाहर जाता है और देखता है कि बारिश का एक छोटा सा बादल आ रहा है और बारिश आ रही है।

तो, विडंबना यह है कि बाल, तूफान का देवता, बादलों का देवता, बारिश का देवता, एलिय्याह के दिनों में भूमि पर बारिश लाने में सक्षम नहीं था। तो, भगवान, यहोवा और बाल की पूजा की धार्मिक प्रणालियों के बीच अस्तित्व संबंधी संकट था। तो, राहब, जब वह एक बच्ची थी, मैं कल्पना करता हूँ कि उसके माता-पिता उसे जेरिको में बाल के प्रथम चर्च में संडे स्कूल में ले जाते थे।

और वह संडे स्कूल में इन सभी देवी-देवताओं के बारे में और बाल कौन थे और अशेरा और अन्य सभी के बारे में सीखती है। और उस से योंकहना, कि तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा परमेश्वर यहोवा, वही ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी का परमेश्वर है। वहाँ निहित, राहब कह रहा है, बाल नहीं है।

मैं एक मिनट में उस पर वापस आऊंगा। लेकिन अब मैं यहां श्लोक 11 में एक विशिष्ट शब्दांकन की ओर इशारा करना चाहता हूँ। यह कहता है कि वह ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी का भगवान है।

और वे शब्द, वह शब्दांकन, सटीक शब्द, ऊपर स्वर्ग, नीचे पृथ्वी, धर्मग्रंथ में पहले केवल तीन बार आए हैं। वे दस आज्ञाओं, निर्गमन 20, और व्यवस्थाविवरण 5 में दो बार आते हैं। और वहाँ यह हमेशा के संदर्भ में है कि आप अपने भगवान भगवान की कोई नक्काशीदार छवियां नहीं बनाएंगे। और यदि ऊपर आकाश में कुछ है, या नीचे पृथ्वी, या पृथ्वी के नीचे जल।

और इसलिए उन दोनों मामलों में, निर्गमन 20, और व्यवस्थाविवरण 5, मुद्दा इस्राएल के ईश्वर की अतुलनीयता है। ये अन्य देवता अस्तित्व में नहीं हैं और आपको उनकी कोई छवि नहीं बनानी चाहिए इत्यादि। लेकिन फिर इसका तीसरा संदर्भ व्यवस्थाविवरण अध्याय 4 में मिलता है। और यह और भी स्पष्ट मार्ग है।

इसलिए, मैं उस ओर मुड़ना चाहता हूँ। यदि आपके पास अपनी बाइबल है, तो आप उसकी ओर रुख कर सकते हैं। व्यवस्थाविवरण 4, श्लोक 39 में, हम एक अनुच्छेद के बीच में आ जाएंगे और इसे संदर्भ से बाहर कर देंगे।

लेकिन हम यहां केवल इस शब्दांकन को देख रहे हैं। व्यवस्थाविवरण 4, पद 39 कहता है, इसलिये आज जानो, और अपने हृदय में यह जान लो, कि यहोवा ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर है। वही सटीक शब्द राहाब के मुँह में थे।

और फिर यह कहा जाता है, कोई दूसरा नहीं है। तो यह स्पष्ट रूप से इज़राइल के ईश्वर की अतुलनीयता के बारे में बात कर रहा है। पेंटाटेच में ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वी के सभी तीन संदर्भ, इज़राइल के ईश्वर की अतुलनीयता के बारे में बात कर रहे हैं।

इसलिए, जब राहाब ये बातें कहती है, तो यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह जो कर रही है वह एक तरह से बाल संडे स्कूल कक्षा के पहले चर्च में सीखी गई हर चीज़ से आगे निकल रही है। वह स्पष्ट रूप से अपने पूर्वजों या परिवार के देवताओं को अस्वीकार कर रही थी और पुष्टि कर रही थी कि यह नया ईश्वर, इज़राइल का ईश्वर जिसके बारे में उसने सुना है, सच्चा ईश्वर है। वह स्वर्ग में है, बाल नहीं।

तो यह उनके द्वारा कहे गए शब्दों में विश्वास का एक बड़ा कदम है। और जिस शहर में, जिस देश में वह रहती है, उस शहर की पूरी धार्मिक व्यवस्था से बाहर निकलकर वह वास्तव में खुद को उजागर कर रही है। इसलिए, मेरे लिए, यहाँ श्लोक 9 से 11 में ये शब्द, विशेष रूप से श्लोक 11, उसके शब्द हैं, शब्दों में उसके विश्वास का बयान है, और यह उसे विश्वास का एक महान नायक बनाता है।

तो, उसका कथन, कार्य में उसका विश्वास, छंद 4 से 7, शब्दों में विश्वास का कथन, छंद 9 से 11। अब, एक प्रश्न जो हम पूछ सकते हैं वह यह है, हे भगवान, दुनिया में राहाब को ये शब्द कैसे पता थे क्या यह कहा जा सकता है कि यह वास्तव में उन शब्दों की प्रतिध्वनि है जो दस आज्ञाओं या व्यवस्थाविवरण में हैं? यह कैसे हो सकता है और मुझे लगता है कि इसके कुछ अलग-अलग उत्तर हैं। एक बात तो यह है कि यह स्पष्ट है, जैसा कि उसने कहा है, इस्राएल के परमेश्वर का वचन इसके पहले आया था।

इस्राएल के परमेश्वर की प्रतिष्ठा इससे पहले हो चुकी थी। उसने सुना था कि परमेश्वर ने मिस्रियों के साथ क्या किया। उसने सुना कि परमेश्वर ने सीहोन और ओग के साथ क्या किया, और वह आम व्यापार के क्षेत्र में रहती थी जो अतीत में होता था।

और इसलिए, यह स्पष्ट है कि वह इस्राएलियों के ईश्वर के बारे में पहले से ही जानती थी, शायद हम उससे अनभिज्ञ थे। उसने और अधिक जानने के लिए कदम उठाए, और उसने इस भगवान के बारे में अन्य बातें सुनी थीं, और उसने उन शब्दों की पुष्टि की। यह एक संभावना है।

मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही उचित संभावना है। एक और संभावना यह है कि उसने ऐसा कुछ कहा था, लेकिन जोशुआ की पुस्तक के लेखक ने, वह जो कह रही थी उसे स्पष्ट करने के लिए, उसने जो कहा था उसे एक तरह से व्याख्यायित किया और इसे कहने के लिए पेंटाटेच के पहले भागों के अनुरूप बनाया।, उसने जो कहा वह वास्तव में विश्वास का एक कदम था, और यह पेंटाटेच की सच्चाइयों में निहित है। और मुझे लगता है कि यह भी इसकी एक उचित समझ है।

तो, ऐसा नहीं है कि यह कोई काल्पनिक कहानी है जिसे किसी ने आविष्कार किया है और चीजों को बिल्कुल फिट कर दिया है। मुझे लगता है कि उसने वास्तव में या तो ये शब्द कहे हैं या उनके काफी करीब कुछ कहा है, और यह उसके विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है। शेष अध्याय जासूसों के साथ उसकी बातचीत और उसकी स्वयं की मुक्ति के बारे में है।

वह कहती है, पद 12 मुझ से यहोवा की शपथ खा, कि जैसे मैं ने तुझ से भलाई की है, वैसे ही तू मेरे पिता के घर में मुझ पर कृपा करेगा। मुझे कोई निश्चित संकेत दीजिये कि आप मुझे जीवित बचा लेंगे। और इसलिए, शेष अध्याय में बातचीत उसके और जासूसों के बीच है, और वे वादा करते हैं कि वे ऐसा करेंगे।

वह उन्हें रस्सी से नीचे उतार देती है। और फिर बाद में अध्याय छह में, जब इस्राएली शहर पर कब्जा करने के लिए जेरिको आते हैं, तो वह इस लाल रंग की रस्सी को खिड़की में डालने जा रही है ताकि वे जान सकें कि क्या नष्ट नहीं करना है। नाल के रंग को मसीह के खून के लाल रंग या इस तरह के टाइपोलॉजिकल प्रतीकों से जोड़ने का कुछ प्रयास किया गया है।

संक्षिप्त उत्तर यह है कि मुझे लगता है कि ऐसा नहीं है, शब्दों के रंग अलग-अलग हैं और यह एक अच्छा प्रयास है, लेकिन यह वास्तव में तथ्यों पर आधारित नहीं है। तो, अध्याय उनके द्वारा उन्हें बाहर निकालने के साथ समाप्त होता है, और श्लोक 21 में, वह खिड़की में लाल रंग की रस्सी बांधती है। वे पहाड़ियों में चले गए, तीन दिन तक वहीं रहे, और फिर वे यहोशू को खोजने के लिए पहाड़ियों से वापस आए।

उन्होंने उसे बताया कि क्या हुआ था, और निष्कर्ष, श्लोक 24, सचमुच प्रभु ने सारी भूमि हमारे हाथ में दे दी है, और भूमि की आदतें भी हमारे कारण नष्ट हो जाती हैं। तो, इस्राएलियों के दृष्टिकोण से, लंबी और छोटी बात यह है कि उन्हें भूमि पर सफलता मिलने वाली है। और यह अध्याय हमें इस बारे में एक अंतर्दृष्टि देता है।

साथ ही, यह हमें एक कनानी की कहानी का एक सुंदर प्रकार का कोष्ठक देता है जो इज़राइल के ईश्वर को गले लगाता है। तो, हम कनानियों के विनाश के पूरे मुद्दे और परमेश्वर की आज्ञा के बारे में दूसरे खंड में बात करेंगे, कनानियों को नष्ट करने के लिए इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञा, और यह बहुत कठोर लगता है। लेकिन उसके पूर्वावलोकन के रूप में, मैं कहूंगा कि वे आदेश थे, उसके पीछे एक अंतर्निहित शर्त थी, यदि कनानियों ने पश्चाताप नहीं किया तो विनाश होगा।

लेकिन मैं तर्क दूंगा कि यदि कनान के बाकी निवासियों ने, जिन्होंने स्पष्ट रूप से इस्राएलियों के बारे में भी सुना था, जैसा कि राहाब ने किया था, यदि कनान के बाकी निवासियों ने भी प्रतिक्रिया

व्यक्त की होती और उसी तरह से प्रतिक्रिया दी होती, जैसे राहब ने की थी, तो ऐसा होता। कोई विनाश नहीं। राहब बाइबिल में मुक्ति की कहानी की कथा का हिस्सा बन जाता है। हम योना की पुस्तक के बारे में आगे सोचते हैं, और योना नीनवे के नष्ट होने के बारे में एक समान संदेश के साथ जाता है, नीनवे पश्चाताप करता है, और भगवान उन्हें वापस खींच लेते हैं और उन्हें नष्ट नहीं करते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि योना में नीनवे का उदाहरण यहोशू की पुस्तक पर लागू होगा, और यदि कनानियों ने पश्चाताप करते हुए इस तरह प्रतिक्रिया की होती, तो वे उस विनाश से बच जाते जो उनका था। राहब के लिए एक अंतिम छोटी टिप्पणी यह है कि आप में से कई लोग जानते हैं, मुझे यकीन है, कि वह भी यीशु की वंशावली का हिस्सा है। तो, आइए, आपको दिखाते हैं कि, यह मैथ्यू की पुस्तक, अध्याय 1 में है, और यदि आप उस पर जाना चाहते हैं, तो हम देखेंगे कि मैथ्यू 1 के पहले 17 छंद यीशु की वंशावली हैं, जो अब्राहम से शुरू होती है। यीशु स्वयं।

इस वंशावली में पाँच महिलाएँ हैं और पाँचों में से चार विदेशी हैं। श्लोक 3 में, हमारे पास तामार है, जो यहूदा की बहू है, लेकिन वह स्पष्ट रूप से एक कनानी है, और वह अपने ससुर को अपने साथ सोने के लिए लुभाने के लिए वेश्या का भेष धारण करती है। हमारे पास राहब है, एक वेश्या, श्लोक 5 में, हमारे पास रूत है, जो मोआबी है, श्लोक 5 में, हमारे पास ऊरिय्याह की पत्नी है, बथशेबा, श्लोक 6, वह निस्संदेह एक हिती है, उसने एक हिती से शादी की है, और फिर हमारे पास है पद 16 में मरियम, यीशु की माँ।

तो, पाँच में से चार विदेशी हैं, इससे यह बात सामने आएगी कि मुझे लगता है कि भगवान, पुराने नियम का भगवान, एक समावेशी भगवान है, न कि एक विशेष भगवान, कभी-कभी इन झूठे द्वंद्वों में से एक यह है कि भगवान का भगवान है पुराने नियम में इज़राइल, नए में अन्यजातियों का परमेश्वर, और पुराने नियम में कई उदाहरण हैं कि, नहीं, परमेश्वर अन्यजातियों का भी परमेश्वर है। यहां अन्य तीन के साथ-साथ एक गैर-यहूदी महिला, राहब का एक महान उदाहरण है, जो दुनिया के उद्धारकर्ता की वंशावली में शामिल हैं। यह भी दिलचस्प है कि इन सभी पाँच महिलाओं में कुछ नैतिक समस्याएं थीं, जैसा कि समाज कह सकता है।

तामार, पद 3, अपने ससुर को फंसाने के लिए वेश्या का वेश धारण करती है। राहब एक वेश्या है। रूत आधी रात में जाती है और बोअज़ के पैरों पर लेट जाती है और उसके पैरों को उघाड़ देती है, चाहे इसका जो भी मतलब हो।

हो सकता है कि मैं पूरी तरह से निर्दोष हूँ, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं अपनी किशोर बेटियों को उनके वर्षों में किसी के साथ ऐसा करना पसंद करूंगा। ऊरिय्याह की पत्नी बथशेबा का दाऊद के साथ प्रेम प्रसंग है। अब, बेशक, उस स्थिति में डेविड ही शक्ति है, लेकिन वह उसका हिस्सा है।

और फिर मैरी का विवाह से बाहर एक बच्चा है। इसलिए, कुछ अलग-अलग कोणों से, मुझे लगता है कि यह दुनिया के लिए भगवान की दृष्टि को दर्शाता है कि इसमें सभी लोग, अन्यजाति और यहां तक कि वे लोग भी शामिल हैं जिन्हें समाज किसी न किसी तरह से अछूत या अनैतिक

के रूप में निंदा कर सकता है। तो, फिर से, यहोशू 2 को समाप्त करते हुए, यह कनानी संस्कृति में निहित एक विदेशी का एक सुंदर उदाहरण है, एक विदेशी जो खुद एक वेश्या है जो इज़राइल के भगवान को गले लगाती है और फिर उस विश्वास के कारण उसे छुड़ाया जाता है जिसे वह शब्दों और कार्यों में प्रदर्शित करती है। .

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र 6, जोशुआ 2, राहब और जासूस है।